ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

धूमिल की कविता में युग चेतना

सारांश

वर्तमान युग नवीनतम ज्ञान और विज्ञान के संदर्भ में तेजी से बदलने वाली आस्थाओं तथा अभिरूचियों का युग है। भारत ही नहीं, विश्व के राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक रंगमंच पर पिछले वर्षों में अनेकानेक नई विचार धाराएँ, नये दृष्टिकोण तथा नये जीवन मूल्य जन्में, विकसित एवं पर्यवसित हुए है। इन सबका प्रभाव देश–विदेश के बौद्धिक वातावरण पर निःसंदेह पड़ा है। इस अवधि में पूर्ववर्ती साहित्य की अपेक्षा नया साहित्य अपनी विशिष्ट रूपरेखा लेकर पाठक समुदाय के समक्ष उपस्थिति हुआ है। यह सत्य है कि काव्य और जीवन का अभिन्न संबन्ध है क्योंकि काव्य जीवन से अपने कोष भरता हैं, जीवन के विविध विषय काव्य में व्यक्त होकर अत्यधिक व्यापक और मार्मिक हो उठते हैं क्योंकि कविता जीवन की रसमय अभिव्यक्ति है तो जीवन की आलोचना भी। कवि काव्य में जीवन और जगत के अपने सारे अनुभवों को व्यक्त करता रहता है अनुभवों का यह भंडार इतना विशाल होता है कि उसमें सुख–दुख, हर्ष–विषाद, आशा–निराशा, पाप–पुण्य, आदि सभी भाव समाहित हो जाते है।

कविता केवल कोरा दर्शन नहीं है और न ही आवेग जन्य विद्रोह बल्कि वह समकालीन स्थितियों का कलात्मक आलेख है। उसकी जीवंतशक्ति वैचारिकता, प्रतिबद्धता–अप्रतिबद्धता, वर्ग विषमता, विसंगतियों–विद्रूपताओं के कलात्मक प्रतिफलन में है। जिस कविता में समकालीन जीवन–मूल्यों की गंध समाहित होती हैं, जो शोषित, पीड़ित, प्रताड़ितों की व्यथा की निर्बाध गाथा कहती हों, वही शाश्वत एवं चिरन्तर कृति होती है।

मुख्य शब्द : राजनीति, कविता, युग चेतना

उपासना
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग
आर्य बन्धु कन्या इण्टर कॉलेज,
गाजियाबाद

प्रस्तावना

राजनीति जैसे मुख्य मुद्दे से कतरा कर निकल जाना किसी सजग–दृष्टा साहित्यकार के लिये असम्भव है क्योंकि राजनीति प्रत्येक कालखंड की तत्कालीन चेतना का निर्माण करती है। अनुभव, अध्ययन और चिन्तन के आधार पर राजनीति आधुनिक सन्दर्भों में नए दृष्टिकोण, मानव मूल्यों के अन्वेषण तथा सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जीवन प्रक्रिया का यथार्थ अंकन है। राजनीति मानव–मन की समान अन्तर भूमियों से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है अतः यह समाज तथा समाज में रहने वाले लोगों का जीवन संचालित करती हुई साहित्यिक मनीषा को भी प्रभावित करती है। राजनीति का विकास मानव–संवेदलना के विकास के साथ समगति का निर्वाह करता है। मनुष्य, समाज और परिवेश के संघर्ष और उसके प्रतिफलन के संगठनात्मक रूप को राजनीति की संज्ञा दी जा सकती है। यह परम सत्य है कि राजनीति काव्यात्मक धरातल पर एक संवेदनशील मुद्दा सिद्ध हुई है।

राजनीति परिचर्चा को काव्य–जगत के लिए एक शुभ संकेत माना गया। रचनाकारों का मानना था कि राजनीति में रूचि लेता कविवर्ग कदापि राष्ट्र के प्रति उदासीन नहीं हो सकता अतः राजनीतिक सिद्धान्तों को समझना और राजनीतिक समस्याओं में रूचि लेना आम बात हो गई है। राजनीति का बढ़ता प्रभुत्व साहित्य जगत के निर्धारित मानदण्डों में अभूतपूर्व परिवर्तन का साक्षी बना है। परिणाम स्वरूप राजनीतिक हलचलों को बेझिझक स्वीकारते कवि राजनीति के चटख रंगों से सराबोर हो गये। तेजी से होते राजनीतिक ध्रुवीकरण पर समकालीन कविता में विस्तारपूर्वक विचार किया गया परिणामस्वरूप सातवें दशक में राजनीति के आन्तरिक पहलुओं पर बेहद खुला विवचेन देखने को मिला। राजनीतिक यथार्थ को कथ्य बनाकर सशक्त कविताएं लिखने वाले कवियों में धूमिल सर्वाधिक चर्चित कवि रहे। उनकी राजनीतिक चेतना एक समस्या के रूप में चित्रित हुई है जो विषम परिस्थितियों से गुजरती हुई स्थान–स्थान पर संवेदनात्मक चुनौतियाँ देती दिखाई पड़ती है।

धूमिल की राजनीति समझ ने अछूते पहलुओं पर ऐसा प्रहार किया जिससे राजनीतिक दोहरापन बेनकाब हो गया। धूमिल ने स्वयं राजनीति की अनिवार्यता को स्वीकार किया है " युवा लेखन के लिये राजनीतिक समझदारी जरूरी है। विना इस राजनीतिक समझदारी के आज का लेखन सम्भव नही।"[1]सैद्धान्तिक स्तर पर राजनीति का खोखलापन धूमिल को आहत करता है। जब धूमिल ने राजनीति के गंदे, बदबूदार तथा सीलनभरे गलियारे में प्रथम बार अपनी लेखनी को प्रविष्ट कराया,वह आजादी के तुंरत बाद की राजनीतिक विफलता का समय था। राजनीति का मंच पूर्णतया कुशल राजनीतिज्ञों से रिक्त हो गया था। ऐसे समय में सत्ता में अराजक तत्वों का समावेश लाजिमी था। स्वस्थ राजनीति और कुशल नेतृत्व का अभाव जनता का आक्रोश बनकर धूमिल के कथ्य और उद्‌देश्य को ध्वनित करने लगा –

"इस देश के बातूनी दिमाग में
किसी विदेशी भाषा का सूर्यास्त
फिर सुलगने लगा है।
लाल–हरी झण्डियाँ
जो काल तक शिखरों पर फहरा रही थीं
वक्त की निचली सतहों में उतर कर
स्याह हो गयी है।"[2]

आजादी कें बीस वर्ष बाद भी देश की राजनीतिक व्यवस्था में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। धूमिल की राजनीतिक चेतना का आरम्भ इसी बिन्दु पर गहन विचार विमर्श से प्रारम्भ होता है। देश विभाजन जैसी त्रासदी राजनीतिक भ्रष्टाचार की देन थी। विभाजन के लिये जिम्मेदार कांग्रेस भ्रष्टाचार का पर्याय बन चुकी थी, जिसमें भाई भतीजावाद, भ्रष्ट और देशद्रोही, पूँजीवादी एवं सामन्ती प्रवृत्तियों का खुला प्रवेश हो गया या यूँ कहे कि राजनीति में भ्रष्टाचार की शुरूआत यहीं से हुई। राजनीति में व्याप्त घोर अनाचार तथा पारस्परिक विवादों से देश की बदहाल व्यवस्था धूमिल के लिये असहनीय है–

"बीस साल बाद
मैं अपने–आपसे एक सवाल करता हूँ,
जानवर बनने के लिये कितने सब्र की जरूरत होती है,
और बिना किसी उत्तर के चुपचाप
आगे बढ़ जाता हूँ।"[3]

धूमिल के लिये वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था अत्यन्त कष्टकारी है। बढ़ती सिद्धान्तहीनता, निरर्थक प्रलाप, स्वार्थमय प्रवृत्तियाँ राजनीतिक भविष्य को गहन अंधकार में ढकेल रहीं है। देशहित सर्वोपरि न होकर निरर्थक नारेबाजी का विषय बन गया है। धूमिल की सक्रिय राजनीतिक समझ व्यवस्था के विरोध में प्रतिफलित हुई है यही कारण है कि धूमिल ने राजनीतिक मूल्यों की गिरावट को पूरी सच्चाई के साथ रूपायित किया। धूमिल की राजनीतिपरक कविताएँ नवीन, मौलिक और अभूतपूर्व उपलब्धियाँ है। इसका एक नमूना दृष्टव्य है –

"बीस साल बाद और इस शरीर में
सुनसान गलियों से चोरों की तरह गुजरते हुए
अपने आप से सवाल करता हूँ–
क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुये रंगों का नाम है,
जिन्हे एक पहिया ढ़ोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है?"[4]

राजनीति धूमिल की कविताओं की आधारशिला है अतः कविता की बुनावट में राजनीतिक शब्दावली का भरपूर प्रयोग हुआ है। संसद, नेता, मतदान, जनतंत्र तथा वोट व्यवस्था के इर्द–गिर्द घूमती कविताएँ राजनीतिक छल प्रपंच तथा अमानवीय क्रिया–कलापों की गवाही देती हुई सत्ताधारियों के चारित्रिक दुहराव पर कठोर प्रहार करती हैं। उद्‌देश्यहीन राजनीति को संचालित करने वाले अकुशल राजनेताओं के मुखौटे भले हीं भिन्न–भिन्न हों, पर उनका स्वरूप एक जैसा ही है। धर्म, जाति, सम्प्रदाय तथा भाषा के आधार पर देश को विभाजित करने वाले नेताओं को देखकर धूमिल का हृदय क्षोभ तथा वितृष्णा से भर उठता है –

"हाँ यह सही है कुर्सियाँ वहीं है
सिर्फ, टोपियाँ बदल गयी है और–
सच्चे मतभेद के अभाव में
लोग उछल–उछल कर
अपनी जगहें बदल रहे हैं
चढ़ी हुई नदी में
हर तरफ, विरोधी विचारों का
दलदल है
सतहों पर हलचल है,
नये–नये नारे है
भाषण में जोश है।"[5]

कुर्सियाँ' धूमिल के काव्य में विशिष्ट महत्व रखतीं हैं, क्योंकि कुर्सियों की गठजोड़ में ही राजनीति का कुटिल व्यापार फलता–फूलता है। कुर्सियों का मोह नेताओं को नैतिकता, सभ्य आचरण तथा सिद्धान्तों की परिधि से कोसों दूर ले जाता है। देशहित को ताक में रखकर जनशक्ति को खोखली हड़ताल तथा निष्प्रभावी योजनाओं में फँसाकर सत्ताधारी अपनी स्थिति मजबूत करने के कयास लगाते रहते हैं ताकि कुर्सी और टोपी दोनों सुरक्षित रह सकें। वर्तमान राजनीति, शुद्ध व्यापारिक लाभ तथा अपने स्वार्थों, आंकाक्षाओं की पूर्ति तक सीमित हो गई है–

''लाल–हरी झण्डियाँ–
जो कल तक शिखरों पर फहरा रहीं थी
वक्त की निचली सतहों में उतरकर
स्याह हो गई हैं और चरित्रहीनता
मंत्रियों की कुर्सी में तबदील हो चुकी है।"[6]

धूमिल की बेबाक टिप्पणियाँ राजनीतिक विद्रूपताओं की गहन धुंध को छांटने सफल हुई है। धूमिल की तरह राजनीतिक महकमों की सियासी चालों का सटीक व्यंग्यात्मक चित्रण शायद ही कोई कवि कर पाया हो। गंदी राजनीति करने वाले नेताओं के मंसूबों को ध्वस्त करते हुए धूमिल कहते है–

"सुविधापरस्त लोगों के

ऊसर दिमाग में
थूहर की तरह उगी हुई राजनीति
शब्दों के बाहर का व्याकरण है।"[7]

धूमिल ने राजनेताओं की चारित्रिक दुर्बलताओं पर भी जमकर आघात किया है। राजनीतिक चरित्रहीनता देश के दुर्भाग्य को आहूत करती है और यही हुआ भी है। राजनीतिक गठजोड़ में उलझे सत्ताधारी तथा विपक्षी अपने दायित्वबोध को भुला बैठे है। सत्ताधरियों के दिशाहीन नेतृत्व पर अंकुश लगाने का कार्य विपक्ष में बैठे सदस्यों का है लेकिन राजनीति के बदलते अर्थ में दोनों दलों की आपसी सांठगांठ आम आदमी के लिये सिरदर्द बन गयी है। पक्ष–विपक्ष की स्थिति 'चोर–चोर मौसेरे भाई' की हो गयी है। यह विडम्बना पूर्ण स्थिति धूमिल को अंचम्भित कर देती है–

"वित्तमंत्री की ऐनक का
कौन–सा शीशा कितना मोटा है,
और विपक्ष की बेंच पर बैठे हुए
नेता के भाईयों के नाम
सस्ते गल्ले की कितनी दुकानों का
कोटा है।"[8]

धूमिल के काव्य में राजनीति हावी रही है "समकालीन व्यक्तियों में धूमिल ही एक ऐसे कवि हैं जिनकी कविताओं में राजनीतिक परिस्थितियों को नये अंदाज एवं तेवर में प्रस्तुत किया गया है इस कवि ने सही रूप में समकालीन समस्याओं को समझा है तथा इसी समझ के आधार पर व्यक्ति–समष्टि के परस्पर सम्बन्ध एवं दायित्व को एक ओर कविता, भाषा और व्याकरण के पारस्परिक सम्बन्ध प्रस्तुत करता है तो दूसरी ओर वह उनमें व्याप्त अन्तर्विरोधों तथा जटिलताओं को राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है।"[9] धूमिल ने राजनीति के प्रति विध्वंसात्मक नीति का निर्धारण किया है। राजनीति के कलुषित स्वरूप को खंडित करने में उनकी आक्रामक मुद्रा देखते ही बनती है वे व्यवस्था विरोधी सोच के बलबूते राजनीतिक ह्रास के मूल कारणों को जानने का जोखिम उठाते है।

बढ़ती अराजकता तथा अवसरवादी राजनीतिज्ञों की प्रगतिविरोधी गतिविधियाँ राष्ट्रीय हितों को अनदेखा कर रही है। राजनीति स्वार्थ–सिद्धि का साधन बन गयी है। आजादी के पूर्व की गुलामी ज्यों की त्यों बनी हुई है। अंग्रेजों के चंगुल से छूटने के बाद भी आम आदमी पर गुलामी का दौर बदस्तूर जारी है। राजनीति का यह हास्यापद रूप धूमिल को क्रांतिकारी कवि बना देता है। वे राजनीतिक भ्रष्टता पर खुलकर बहस करते है ताकि कोई बात अंधेरे में न रहे। धूमिल की बेलाग अभिव्यक्तियाँ सच्चाई को सामने लाने में समर्थ हैं –

"हिन्दुस्तान की जमीन को
नंगा कर रहा है
एक विदेशी मुद्रावाला –
अवनैतिकग दुभाषिया खिलखिला रहा है–
और वो देखो
वह निहाल–तोदियल
कैसा मगन है
हुचुर–हुचुर हँस रहा है।" [10]

राजनीति में आदर्शों और सिद्धान्तों की बातें करने के दिन अब लद चुके है। हमारी राजनीतिक पृष्ठभूमि शर्मनाक और निदंनीय उदाहरणों से भरी पड़ी है। लज्जाजनक दावपेंचों वाली राजनीति के प्रति किसी के भी मन में सम्मान और आदर की अनुभूति नहीं हो सकती फिर धूमिल तो जागरूक कवि हैं भला आधारहीन और सारहीन राजनीति पर वह चुप्पी कैसे साध सकते है। धूमिल ने 'पटकथा' में राजनीतिक षड्यंत्रों का पारदर्शी आंकलन किया है इसे हम राजनीति पर तैयार एक प्रभावी वक्तव्य भी कह सकते है जिसमें राजनीतिक अस्थिरता, राजनीति में जातीय और साम्प्रदायिक समीकरण, चुनावी तालमेल में भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा पर मुखर प्रतिवाद समाहित है–

हर तरफ धुँआ है
हर तरफ कुहासा है
जो दांतो और दलदलों का दलाल है
वही देशभक्त है
अन्धकार में सुरक्षित होने का नाम है–
तटस्थता। यहाँ
कायरता के चेहरे पर
सबसे ज्यादा रक्त है।
जिसके पास थाली है, हर भूखा आदमी
उसके लिए, सबसे भद्दी गाली है।"[11]

नेताओं के प्रति धूमिल का दृष्टिकोण उग्र है लेकिन यह उग्रता अतिवाद का शिकार नहीं है। कुछ महान राजनेताओं के प्रति उनकी उदारवादी प्रतिक्रिया कुछ क्षण के लिये महान आश्चर्य से भर देती है। एक भावुक कवि की भाँति धूमिल नेहरू के प्रभावशाली व्यक्तित्व से प्रभावित होते है, तो दूसरी ओर लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु को बज्रपात के समान दुःखदायी मानते है। जिनके लिए राजनीति एक साधनात्मक कर्म है जो त्याग और बलिदान को सर्वोपरि मानते है। धूमिल उनके प्रति कृतज्ञ हैं। राजनीति संदर्भों में धूमिल की कटु आलोचना 'आजादी के बाद', 'वादों की लालच में', 'जनतंत्र त्याग', स्वतन्त्रता, संस्कृति, शक्ति, मनुष्यता,' के सही अर्थ तलाशती हुई 'सारी चीजों को नये सिरे से बदलने की , प्रतिज्ञा के साथ पूरी होती है। निष्कर्ष के तौर पर धूमिल पूरी व्यवस्था की बदलने की बात कहते हैं –

"मेरे साथ चलो
मेरा यकीन करो इस दलदल से
बाहर निकालों!
सुनो!
तुम चाहे जिसे चुनो
मगर इसे नही। इसे बदलो।"[12]

धूमिल की राजनीतिक कविताओं में ऊँचे दर्जे की अन्वेषक दृष्टि का आभास होता है। "धूमिल की कविता सच्चे अर्थों में सड़क और संसद अर्थात् जनता और जनतंत्र की कविता है। उनकी कविता की सारी

शब्दावली सामाजिक और राजनीतिक संसार की शब्दावली है। वे सही अर्थों में सामाजिक–राजनीतिक चेतना के कवि है। ....'जनतंत्र' और 'संसद' जैसे शब्दों का अधिक प्रयोग धूमिल की कविताओं की राजनीतिक जागरूकता को व्यक्त करता है।"[13]

धूमिल के काव्य में राजनीति एक विचारणीय तथ्य है जिसके अन्तर्गत वास्तविकता का अत्यन्त निकटता से आभास किया जा सकता है। धूमिल को अपनी काव्य शक्ति के परीक्षण हेतु राजनीति से बढ़कर विस्तृत क्षेत्र और कहाँ मिल सकता है। राजनीति को माध्यम बनाकर धूमिल ने जीवन की प्रत्येक स्थिति के मर्मस्पर्शी अंशों का प्रत्यक्ष अनुभव किया है क्योंकि " कविता में राजनीतिक यथार्थ की अभिव्यक्ति कवि और पाठकों के बीच एक सजीव संवाद की स्थापना में सहायक होती है।"[14] धूमिल की कविताएं व्यर्थ के विवादों से दूर राजनीतिक छद्मावरण तथा विद्रुपित मापदण्डों की निष्पक्ष कहानी कहती हैं जो उनकी सोच प्रक्रिया का सार्थक परिणाम है। निःसन्देह धूमिल की राजनीतिक सक्रियता तथा उससे जुड़े विचारों में विरोध का चरमोंत्कर्ष काव्य जगत में नवीनता तथा बदलाव के संवाहन बने है। कविताओं में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द युगीन संदर्भों से सम्बद्ध है। राजनीतिक परिवेश को विश्वसनीय रचनात्मकता प्रदान कर काव्यधारा से जोड़ने का जोखिम भरा कार्य धूमिल ने किया, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

अध्ययन का उद्देश्य

यही कठोर सत्य धूमिल के काव्य में सर्वाधिक मुखर है। उनके अनुभव की व्यापकता सामाजिक संदर्भों से सम्बन्धित है जबकि गहराई का सम्बन्ध कवि के वैयक्तिक अनुभवों से है। यद्यपि धूमिल ने अनुभव की व्यापाकता पर अधिक ध्यान दिया। वे समाज में फैली अव्यवस्था और विषमता तथा राजनीतिक परिदृश्य के स्याह पक्षों को देखते हुए साहित्य सृजन करतें है तथा काव्य की वर्जनाओं को तोड़ते हुए मुक्त लेखन और कटु यथार्थ को अंगीकार करते है। यथार्थ बोध और अनुभूति का पैनापन उनके काव्य का प्राणतत्व है। प्रस्तुत ग्रंथ ग्यारह अध्यायों में विभाजित है। इन अध्यायों के अन्तर्गत मैंने साठोत्तरी कविता के स्वरूप, परम्परा और विकास का अध्ययन तो प्रस्तुत किया ही है साथ ही धूमिल काव्य के संपूर्ण युगबोध तथा उनके विशेष योगदान पर व्यापक प्रकाश डालने का प्रयास किया है। यह काव्यधारा अपने पूर्व की काव्यधाराओ से किन अर्थों में भिन्न थी? वस्तु और रूप दोनों दृष्टियों में इस काव्य की क्या विशेषताएँ हैं, अथवा कौन से आंदोलन और प्रभाव इस काव्यधारा में दृष्टिगत होते है?

निष्कर्ष

धूमिल के काव्य की राजनीतिक चेतना यही सिद्ध करती है कि धूमिल के लिये राजनीति, राष्ट्रीय विकास की एक महत्वपूर्ण धारा है जो राष्ट्र, प्रान्तीयता प्रादेशिकता और साम्प्रदायिकता की संकीर्णता से ऊपर उठकर एक महत्वपूर्ण इकाई बन गई है। इसके साथ विकास की विराट–आंकाक्षा जुड़ी है। लेकिन इधर कुछ समय से राजनीति में कलुषता का जो प्रवाह देखने को मिला है वह निश्चय ही भर्त्सना योग्य है। धूमिल ने यही प्रयास किया है। उन्होने सारी काव्य शक्ति को राजनीतिक संकट के लिये समर्पित कर दिया और राजनीतिक चेतना में डूबने वाले एकदम समर्पित कवि बन गये ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *धूमिल –कल सुनना मुझे – भूमिका, पृ 4*
2. *धूमिल–संसद से सड़क तक, शहर में सूर्यास्त, पृ 43*
3. *धूमिल –संसद से सड़क तक, बीस साल बाद, पृ 9*
4. *धूमिल –संसद से सड़क तक, बीस साल बाद, पृ 10*
5. *धूमिल–संसद से सड़क तक, पटकथा, पृ 125*
6. *धूमिल–संसद से सड़क तक, शहर मे सूर्यास्त, पृ 43*
7. *धूमिल –संसद से सड़क तक, भाषा की रात, पृ 97*
8. *धूमिल–संसद से सड़क तक, मुनासिब काररवाही, पृ 84*
9. *हुकुम चन्द्र राजपाल–समकालीन कविता में मानवमूल्य, पृ 173*
10. *धूमिल –संसद से सड़क तक, भाषा की रात, पृ 95*
11. *धूमिल –संसद से सड़क तक, पटकथा, पृ 106*
12. *धूमिल–संसद से सड़क तक, पटकथा, पृ 111–112*
13. *विश्वनाथ तिवारी– समकालीन हिन्दी कविता, पृ 197*